एक तोता और एक चोर

एक समय की बात है कि एक गाँव में एक आदमी रहता था. जब वह किसी काम-धंधे में सफल न हुआ तो चोरियाँ करने लगा. गाँव से दूर एक बंदरगाह थी जहां दूर देशों से जहाज़ आया करते थे. एक दिन बंदरगाह के निकट उसे इक पिंजरे में इक तोता मिला. उसने वह तोता चुरा लिया.

तोता उसके किसी काम का न था लेकिन फिर भी चोर ने उसे रख लिया क्योंकि वह तोता बातें कर सकता था. चोर को लगा कि शायद किसी छिपे हुए खज़ाने के विषय में तोता कभी उसे बताये.
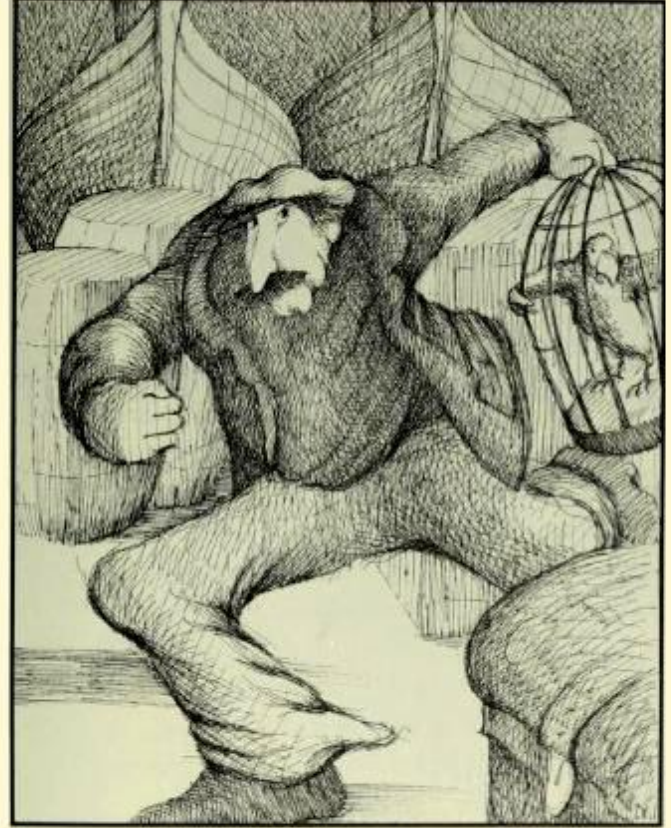
वह पिंजरा उठा कर अपने घर ले आया. उसी दिन अपने एक पड़ोसी की एक भेड़ उसने चुरा ली. उसने भेड़ को मार कर उसका कुछ मांस पका कर खा लिया और बचा हुआ मांस खलिहान में छिपा कर रख दिया.

शाम के समय पड़ोसी अपनी खोई हुई भेड़ को ढूँढ़ता हुआ आया और उस आदमी से पूछा कि क्या उसने भेड़ को कहीं देखा था. चोर ने कहा कि उसने नहीं देखा था. लेकिन तोता बोल पड़ा, "उसने भेड़ को मार डाला और उसका कुछ हिस्सा खलिहान में छिपा दिया." तोता अपने असली स्वामी के पास लौट कर, जहाज़ की यात्रा पर जाना चाहता था.

पड़ोसी को भेड़ का बचा हुआ भाग वहीं मिला जहां तोते ने बताया था. लेकिन चोर बोला, "मैंने तुम्हारी भेड़ नहीं चुराई थी. यह मूर्ख तोता सदा झूठ बोलता है." तोते ने फिर चिल्ला कर कहा, "उसने भेड़ को मार डाला और उसका कुछ हिस्सा खलिहान में छिपा दिया!"

पड़ोसी यह समझ न पाया कि तोते की बात का विश्वास करे या फिर उस आदमी की बात का. उसने अदालत के सामने गुहार लगाई. अगले दिन मामले की सुनवाई रखी गयी.
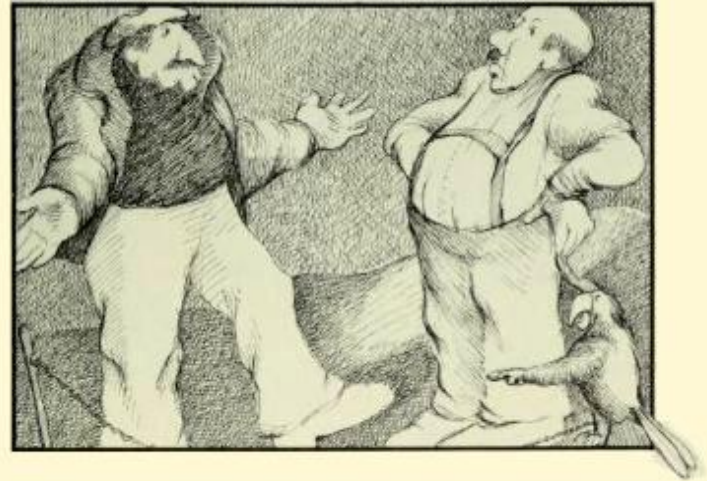
उस रात चोर ने तोते को एक पीपे में डाल दिया और एक कपड़े से पीपे को ऊपर से ढक कर बंद कर दिया. सारी रात वह कपड़े के ऊपर पानी गिराता रहा और पीपे को एक छड़ी से बीच-बीच में पीटता रहा. ऐसा करने से गर्जन की आवाज़ सी आती. वह एक सुहावनी रात थी और आकाश में चाँद और तारे चमक रहे थे. लेकिन पीपे के अंदर बंद तोते को यह बात पता न थी. जब सूर्य उदय हुआ तो उस आदमी ने तोते को पीपे से बाहर निकाल कर पिंजरे में बंद कर दिया और उसे गवाह के रूप में अदालत ले गया.
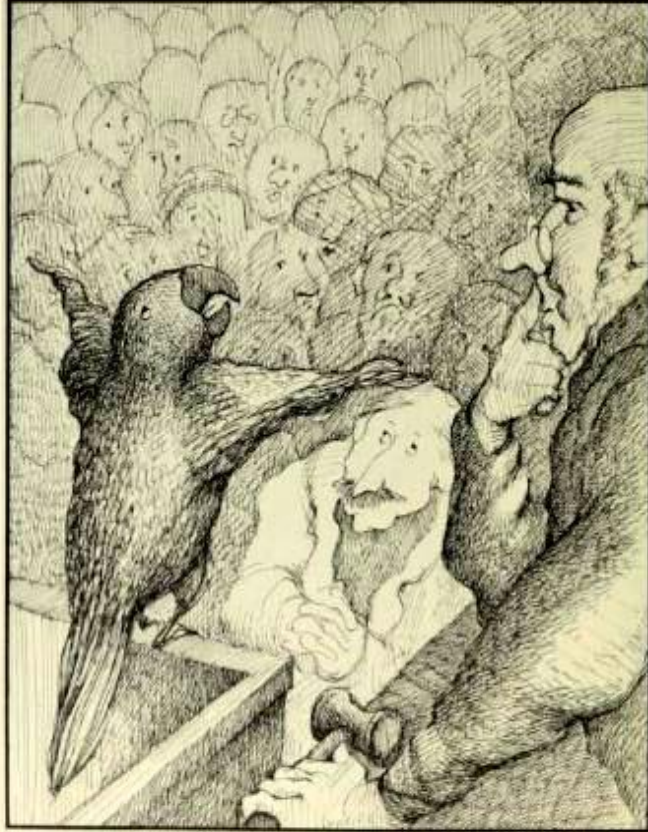
जब अदालत में तोते को अपनी बात कहने के लिए बुलाया गया तो उसने वही कहा जो उसने पहले कहा था, “उसने भेड़ को मार डाला और उसका कुछ हिस्सा खलिहान में छिपा दिया.”

सब लोगों ने तोते की बात का विश्वास किया.

लेकिन चोर बोला, “क्या एक तोते की बात का विश्वास कर आप मुझे जेल भेज देंगे? मैं उस भेड़ की विषय में कुछ भी नहीं जानता. इसको कोई दूसरा प्रश्न पूछो. इसको पूछो कि कल की रात कैसी रात थी.”

तोते को वही प्रश्न पूछा गया. पिछली भयानक रात की गर्जन और पीपे के ऊपर बहते पानी को याद कर तोता बोला, “पिछली रात तो खूब वर्षा हुई थी, आंधी चली थी, बादल गरजे थे.”

उसकी बात सुन लोग बोले, “निश्चय ही इस पक्षी की बात का विश्वास नहीं किया जा सकता!” और चोर को छोड़ दिया गया. वह अपना तोता लेकर चला गया.

उसी दिन बाद में चोर एक अन्य पड़ोसिन के घर गया और उसका एक मुर्गा चुरा लाया. मुर्गे को मार कर उसने उसका मांस पका कर खा लिया. मुर्गे की हड्डियाँ और पंखो को घर के बाहर, पंप के निकट, ज़मीन में गाड़ दिया.

अपने मुर्गे को ढूँढ़ते हुए पड़ोसिन चोर के घर आई और उससे पूछा कि क्या उसने उसका मुर्गा देखा था. "मैंने तुम्हारा मुर्गा नहीं देखा," चोर ने उत्तर दिया. लेकिन उसका तोता बोल पडा, "उसने मुर्गे को मार डाला और उसे पका कर खा गया. हड्डियाँ और पंख पंप के निकट ज़मीन में गाड़ दिये."

पड़ोसिन को मुर्गे के पंख वगैरह वहीं मिले जहां तोते ने बताया था. लेकिन चोर बोला, "मैंने मुर्गा नहीं चुराया था." लेकिन तोता चिल्लाया, "उसने मुर्गे को मार डाला और उसे पका कर खा गया. हड्डियाँ और पंख पंप के निकट ज़मीन में दबा दिये."

"यह मूर्ख तोता सिर्फ झूठ बोलता है," चोर ने मज़ाक उड़ाते हुए कहा.

पड़ोसिन तय न कर पाई कि कौन सच बोल रहा था. इसलिये उसने अदालत में गुहार लगाई. अगले दिन मामले की सुनवाई रखी गयी.

उस रात चोर ने तोते को बड़े कनस्तर में डाल दिया, जिसके अंदर थोड़ा पानी भी था. कनस्तर को ऐसे ढक्कन से बंद कर दिया जिसमें कई सूराख थे. कनस्तर के चारों ओर उसने बर्फ रख दी और सारी रात उस पर हवा करता रहा. बर्फ के ऊपर चलती हवा सुराखों से गुज़र कर कनस्तर के अंदर जाती रही और कनस्तर के अंदर रखा पानी जम गया. वह एक सुहावनी रात थी और आकाश में चाँद और तारे चमक रहे थे. लेकिन कनस्तर के अंदर बंद तोते को यह बात पता न थी. सुबह होने पर उसने तोते को कनस्तर से बाहर निकाला. तोता तो ठंड से जम ही गया था. आदेश अनुसार, तोते को पिंजरे में बंद करे के गवाही देने के लिये वह अदालत ले आया.
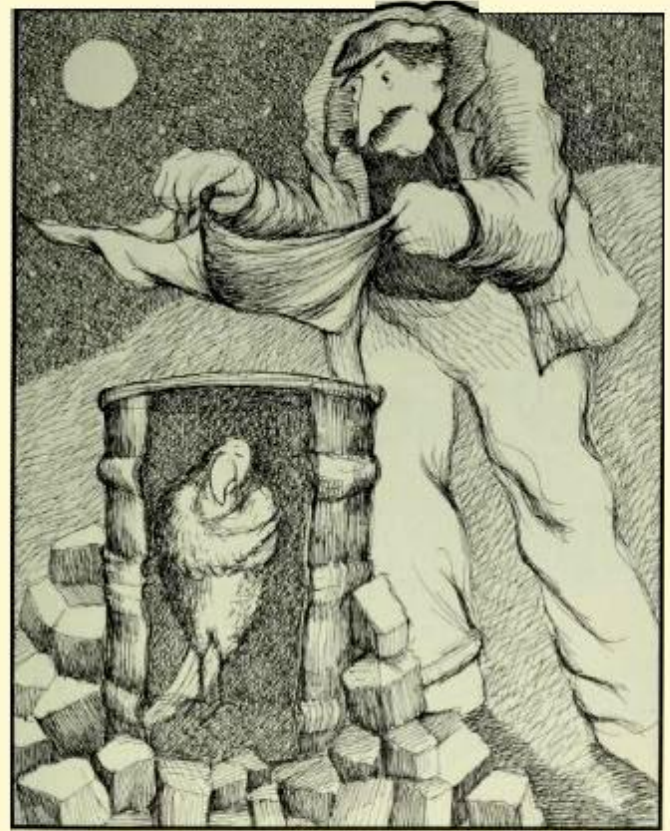
तोते को ब्यान देने के लिये बुलाया गया और उसने वही कहा जो पहले कहा था, “उसने मुर्गे को मार डाला और उसे पका कर खा गया. हड्डियाँ और पंख पंप के निकट ज़मीन में दबा दिये.”

लोग तोते की बात का विश्वास करना चाहते थी.

लेकिन चोर बोला, “इस पक्षी का विश्वास नहीं किया जा सकता. उन हड्डियों और पंखों के विषय में मुझे कुछ नहीं पता. निश्चय ही इस झूठे तोते के ब्यान पर आप मुझे जेल नहीं भेजेंगे. इसे कोई और प्रश्न पूछें. इसको पूछें कि कल की रात कैसी रात थी.

तोते से वही प्रश्न पूछा गया. पिछली ठंडी रात को याद कर तोता बोला, “कल रात बहुत ठंडी हवा चल रही थी और पानी जम कर बर्फ बन गया था.”

लोगों ने अपने सिर हिला कर कहा, “इस पक्षी की बातों का विश्वास नहीं किया जा सकता. यह आदमी निर्दोष है.” और उन्होंने चोर को जाने दिया. वह अपना तोता अपने साथ ले गया.

उसी दिन उस आदमी ने एक अन्य पड़ोसी का सूअर चुरा लिया और सूअर को मार कर उसका कुछ मांस पका कर खा गया और बचा हुआ लकड़ी के गोदाम में छिपा कर रख दिया.

जल्दी ही वह पड़ोसी अपना सूअर ढूँढ़ता हुआ वहां आया. उसने चोर से पूछा कि क्या उसने उसका सूअर देखा था. वह बोला, "मैंने बिलकुल भी नहीं देखा." लेकिन तोता बोल पडा, "उसने सूअर को मार डाला. उसका थोड़ा सा मांस पका कर खा गया और बचा हुआ लकड़ी के गोदाम में छिपा दिया."

पड़ोसी ने देखा कि चोर ने वैसा ही किया था, परन्तु चोर बोला, "मैंने सूअर नहीं चुराया. यह मूर्ख तोता सच नहीं बोल सकता." लेकिन तोते ने फिर दोहराया, "उसने सूअर को मार डाला. उसका थोड़ा सा मांस पका कर खा गया और बचा हुआ लकड़ी के गोदाम में छिपा दिया."

पड़ोसी ने कहा कि अब अदालत ही इस बात का निर्णय करेगी. अगले दिन मामले की सुनवाई रखी गयी.
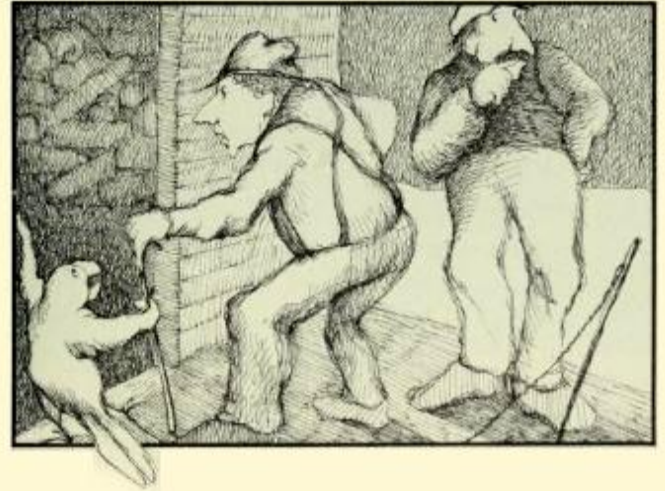
उस रात चोर ने एक बड़े बर्तन के पास आग जलाने की लकड़ी इकट्ठी कर ली. उसी बर्तन में वह तोते को रखने वाला था. वह सारी रात आग जला कर रखना चाहता था ताकि अगले दिन तोता अदालत को यह बताये कि रात में बहुत गर्मी थी, उतनी गर्मी जितनी गर्मियों के सबसे गर्म दिन में होती है. लेकिन तोते ने खिड़की से देख लिया कि चोर उसके साथ क्या करने वाला था. तोता अब समझ गया कि पिछली दो भयानक रातों में उसके साथ क्या किया गया था और क्यों लोग उसकी बात का विश्वास न कर रहे थे. तोते को फिर से मूर्ख बनाने के लिए जब उस आदमी ने सारी तैयारी कर ली तो उसने तोते को पिंजरे से निकाल कर बड़े बर्तन में रख दिया और ऊपर से ढक्कन बंद कर दिया. फिर उसने लकड़ियों को आग लगा दी. लगभग एक घंटे तक उसने धीमी आग जलाये रखी. फिर वह सोने के लिए अपने बिस्तर पर चला गया. उसे लगा कि जलते हुए कोयले बाकी का काम कर देंगे.
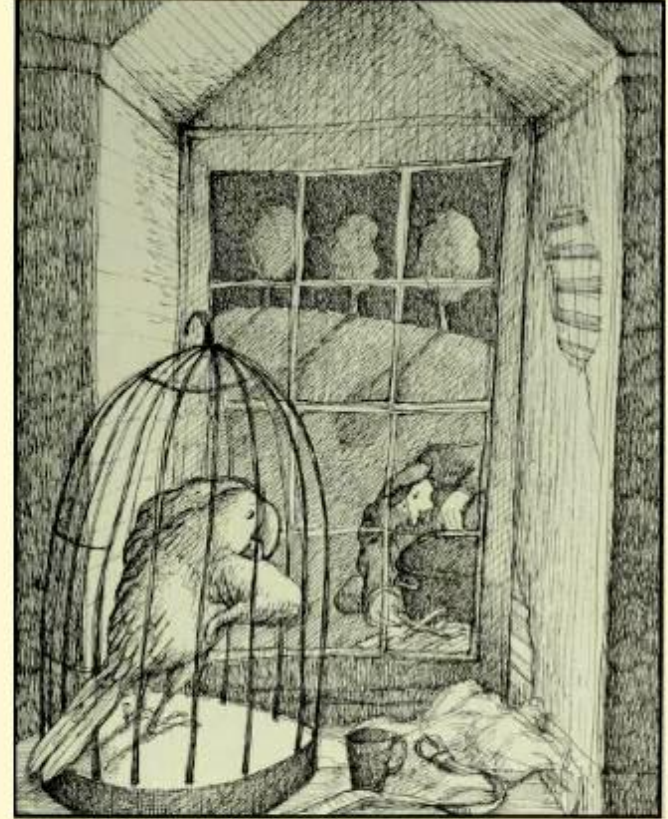
बर्तन के अंदर तोते को बहुत कष्ट हो रहा था. उस आदमी के जाने की आवाज़ सुनने का उसने प्रयास किया. उस आदमी के जाने के बाद तोते ने बर्तन का ढक्कन खोल लिया और उछल कर बाहर आ गया. यह एक सुहावनी रात थी और आकाश में चाँद और तारे चमक रहे थे.

तोता उड़ कर घर की छत पर आ गया और बाकी रात नाचता रहा. जितने भी नृत्य उसने उस नाविक से सीखे थे, जो उसका असली स्वामी था, वह सब नृत्य उसने किये. चोर के बिस्तर के ठीक ऊपर छत पर वह बार-बार पंजों से खटखटाता रहा. सुबह होने से पहले वह उड़ कर नीचे आया और बर्तन में बैठ गया और उसका ढक्कन खींच कर बंद कर लिया.

चोर देर से ही जागा. छत पर मच रहे शोर के कारण वह रात-भर ठीक से सो न पाया था. उसने तोते को पिंजरे में बंद कर दिया और उसे साथ ले फिर एक बार अदालत आ गया.
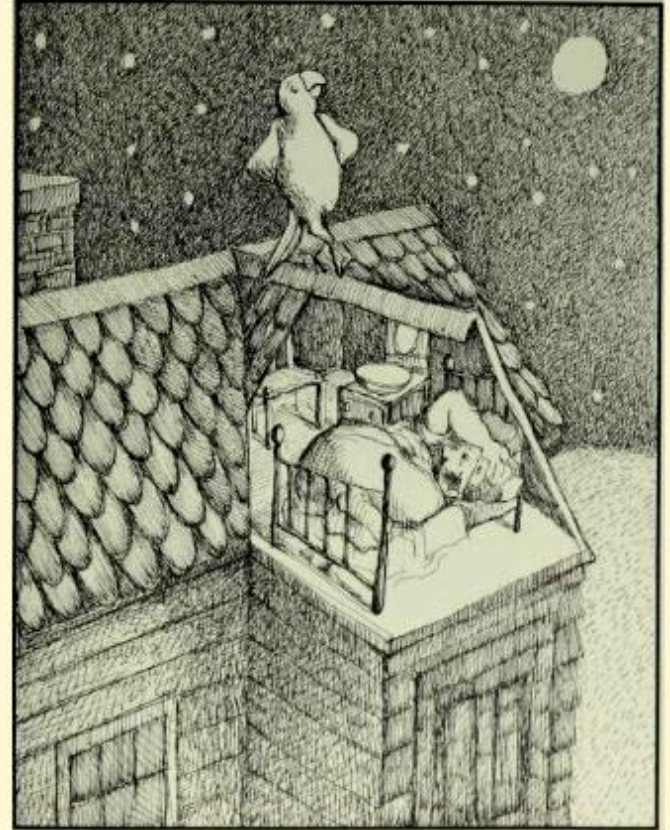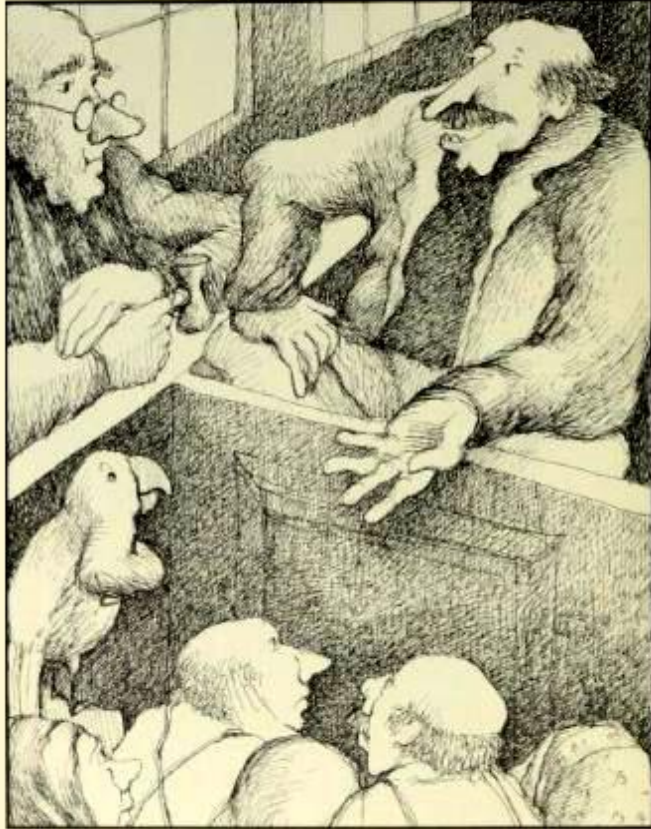
लोगों को अब तोते की बातों का अधिक विश्वास न था फिर भी उन्होंने उसकी बात ध्यान से सुनी. "उसने सूअर को मार डाला. उसका थोड़ा सा मांस पका कर खा गया और बचा हुआ लकड़ी के गोदाम में छिपा दिया."

फिर चोर को अपनी बात कहने के लिये बुलाया गया.

"एक मूर्ख पक्षी की बात पर आप मुझे जेल नहीं भेज सकते," चोर ने आत्मविश्वास के साथ कहा. "मुझे क्या पता कि सूअर लकड़ी के गोदाम में कैसे आ गया? इसे कोई और प्रश्न पूछो. इसे पूछो कि कल की रात कैसी थी. अगर वह नहीं बता पाया तो इसका विश्वास नहीं किया जा सकता."

अदालत के पूछने पर तोता बोला, "सुहावनी रात थी और आकाश में चाँद और तारे चमक रहे थे." यही सच था.

चोर को बड़ा आश्चर्य हुआ. वह तो समझे बैठा था कि तोते ने सारी रात बर्तन के अंदर गर्मी में तपते हुए बिताई थी. लेकिन वह घबराया नहीं और बोला, “देखा! इस पक्षी की बात का विश्वास नहीं किया जा सकता. सब जानते हैं कि कल रात कितने ओले गिरे थे! छत पर ओले इतनी ज़ोर से गिर रहे थे कि सोना भी कठिन हो गया था.”

उसकी बात सुन कर अदालत को बहुत आश्चर्य हुआ और सब एक साथ बोले, “इसे ले जाओ और जेल में बंद कर दो! इसकी बातों का विश्वास नहीं किया जा सकता. यह आदमी सच में चोर है!”

बस उस चोर को जेल में बंद कर दिया गया. लोग तोते को उसी बंदरगाह ले गये जहां से उसे वह आदमी चुरा कर लाया था. नाविक, जो उसका असली स्वामी था, अपने खोये हुए तोते के लिये बहुत दुःखी था. जब तोता उस वापस मिला तो ख़ुशी से उसे अपने कंधे पर बिठा कर वह अपने जहाज़ पर आ गया और दोनों एक नई समुद्री यात्रा करने चल पड़े.

समाप्त